

डॉ. लेस्ली एलन, विलाप, सत्र 1, परिचय, भाग 1

© 2024 लेस्ली एलन और टेड हिल्डेब्रांट

विलाप पर वीडियो की इस श्रृंखला में आपका स्वागत है। मैं 7 और 11 के संदर्भ और अमेरिकी इतिहास में इसकी भूमिका से शुरुआत करना चाहता हूँ। हम इसे 2001 में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर टावरों के विनाश के उस भयानक दिन की सालगिरह के रूप में जानते हैं।

मैं उस घटना का जिक्र इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि प्राचीन यहूदी इतिहास में एक तरह की समानता है, और विलाप का मतलब यही है। यहूदी धार्मिक कैलेंडर में एक खास दिन होता है। इसे पवित्र दिन कहा जाता है।

और यहूदी कैलेंडर के अनुसार, यह पांचवें महीने का नौवां दिन है। यदि आप वर्तमान यहूदी कैलेंडर को देखें, तो आप देखेंगे कि यह इस वर्ष 22 जुलाई को रविवार के रूप में आता है। और यदि आप किसी आराधनालय के पास से गुजरते हैं, तो आप देखेंगे कि दरवाज़े खुले हैं और सेवा चल रही है।

वह सेवा वर्षगांठ है, 5-9, जो 7-11 के समकक्ष है। यह 586 ईसा पूर्व का वह दिन था जब बेबीलोन की सेना के हाथों 18 महीने की घेराबंदी के बाद, यरूशलेम के पतन के तुरंत बाद मंदिर नष्ट हो गया था। और इसलिए, यह वर्षगांठ उस दुखद तथ्य का स्मरण कराती है।

फिर, बाद के इतिहास में, हम शायद जानते हैं कि दूसरा मंदिर 70 ई. में नष्ट हो गया था। और इसलिए, पांचवें महीने के नौवें दिन का यह पवित्र दिन भी दो मंदिरों के विनाश का जश्न मनाता है। फिर भी, यह कुछ ऐसा है जो यहूदी संतों को बहुत दुःख पहुँचाता है।

विलापगीत उस वर्षगांठ से बहुत करीब से जुड़ा हुआ है। इतना करीब से कि सेवा के दौरान विलापगीत की किताब पढ़ी जाती है। और इसलिए यह किताब यहूदी विश्वासियों के लिए जीवित है, जो कि हम ईसाइयों के मामले में होने वाली घटनाओं से बहुत अलग है।

अक्सर, इसे अनदेखा कर दिया जाता है। मुझे याद है कि एक बार मैं विलापगीत पढ़ रहा था, और चर्च में एक महिला ने मुझसे पूछा, आप क्या पढ़ रहे हैं? मैंने कहा, विलापगीत। ओह, उसने कहा, मैं वह किताब नहीं पढ़ती।

यह एक भयानक किताब है। और आप जानते हैं कि यह कैसी है। आप अचंभित हैं, और आपको नहीं पता कि क्या कहना है।

और बाद में, मुझे कहना चाहिए था, मुझे एहसास हुआ, हाँ, यह एक भयानक किताब है। लेकिन यह भयानक समय के लिए एक किताब है, और कभी-कभी, हमें भयानक समय से गुजरना पड़ता है।

और फिर यही वह समय है जब हमें विलाप की पुस्तक की आवश्यकता होती है। लेकिन जैसा कि मैंने कहा, यह ईसाई समुदाय में तुलनात्मक रूप से अज्ञात है, न कि इसे नियमित रूप से पढ़ा जाता है। और अध्याय 3 में केवल कुछ छंद हैं जिन्हें एक प्रसिद्ध भजन के आधार के रूप में जाना जाता है, तेरी वफादारी महान है।

लेकिन इसके अलावा, अगर आप किसी से पूछें कि विलाप किस बारे में है, तो वहां केवल चुप्पी होगी। लेकिन हमें इसके महत्व को फिर से खोजने की जरूरत है। हमें इसके महत्व की सराहना करने की जरूरत है।

हमें यह देखना होगा कि यह चर्च और आराधनालय के लिए परमेश्वर का उपहार है। लेकिन यह आसान नहीं है। विलाप अपनी ही दुनिया में रहता है।

और इन पहले दो वीडियो में हमें जो करना है, वह है उस दुनिया के अंदर जाने की कोशिश करना और देखना कि विलाप कैसे चलता है। हमें यह समझना होगा कि विलाप की पृष्ठभूमि क्या है, इसके संदर्भ क्या हैं, साहित्यिक संदर्भ, ऐतिहासिक संदर्भ, इतिहास के किसी विशेष समय में इसकी सेटिंग क्या है, विलाप के पीछे कौन सी परंपराएँ हैं, जिनका विलाप लाभ उठा सकता है और उनका अच्छा उपयोग कर सकता है क्योंकि वे उन लोगों को पता थीं जो वहाँ शोक मना रहे थे। इसलिए, जैसा कि मैंने कहा, विलाप अपनी ही दुनिया में रहता है।

शायद हम यह पूछकर शुरू कर सकते हैं कि बाइबिल के कैनन में विलाप का क्या स्थान है? और यह पूछना आसान है, उत्तर देने से ज़्यादा क्योंकि हिब्रू बाइबिल में, जिसे हम पुराना नियम कहते हैं, हिब्रू बाइबिल हमारे पुराने नियम के ईसाई कैनन से पहले की है। वहाँ, हम विलाप को एक अप्रत्याशित स्थान पर पाते हैं क्योंकि हिब्रू बाइबिल तीन भागों में विभाजित है: कानून, भविष्यवक्ता, और लेखन। लेखन के बीच में विलाप हैं।

और इसके चार साथी हैं। पाँच स्कॉल थे जो लेखन में एक साथ बैठे थे। रूथ, गीतों का गीत, सभोपदेशक, विलाप और एस्तेर हैं।

इन सभी में जो बात एक है वह यह है कि इन सभी का इस्तेमाल त्योहारों के समय या पवित्र दिनों पर किया जाता है और पढ़ा जाता है। और इसलिए, भविष्यवक्ताओं के बाद इस अंतिम खंड में एक स्वाभाविक समूह रखा गया है। उदाहरण के लिए, रूथ को सप्ताहों के पर्व पर पढ़ा जाता था, गीतों का गीत फसह के पर्व पर पढ़ा जाता था, एस्तेर को पुरीम के पर्व पर पढ़ा जाता था, और विलाप को इस पवित्र दिन, पांचवें महीने के नौवें दिन पढ़ा जाता था।

तो यह हिब्रू उत्तर है। यह कैनन में विलाप के स्थान के लिए यहूदी उत्तर है। लेकिन जब हम ईसाई कैनन में आते हैं, तो हमें यह महसूस करना होगा कि एक बड़ा बदलाव हुआ था और पुराने नियम को किसी तरह नए नियम के साथ एकीकृत करने की बहुत आवश्यकता थी।

ऐसा भविष्यवक्ताओं को सबसे अंत में रखकर किया गया। इसलिए, भविष्यवक्ता आगे देखते हैं, और नया नियम पीछे देखता है। उचित रूप से, मैथ्यू को पहली पुस्तक और पहले सुसमाचार के रूप में रखा गया है क्योंकि यह अक्सर पुराने नियम की ओर देखता है।

और इस तरह, पुराने नियम और नए नियम के बीच एक पुल बनाया गया। और भविष्यवक्ताओं को मसीह के समय और चर्च के समय की प्रतीक्षा करते हुए माना जाता है। लेकिन आप लेखन के साथ क्या करते हैं? उन्हें भविष्यवक्ताओं के सामने यहाँ-वहाँ उपयुक्त स्थान पर वापस रखना पड़ा।

विलाप यिर्मयाह के बाद आया क्योंकि एक प्राचीन मान्यता थी कि यिर्मयाह ने विलाप लिखा था। उस मान्यता का कोई खास महत्व नहीं है। यह पुस्तक वास्तव में गुमनाम है, और हमें इसकी गुमनामी का सम्मान करना चाहिए और किसी लेखक को इस पर थोपने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, जैसा कि किंग जेम्स संस्करण में है, जहाँ इब्रानियों को लिखे गए पत्र को पॉल का पत्र कहा जाता है।

और अब कोई भी इस पर विश्वास नहीं करता। और यह एक गलत धारणा थी। लेकिन विलाप भविष्यवक्ताओं के बीच में आता है और यह उचित है क्योंकि हम देखेंगे कि विलाप जिस परंपरा पर आधारित है वह एक भविष्यवाणी परंपरा है।

वह भविष्यवाणी परंपरा विलाप के पहले श्रोताओं को ज्ञात रही होगी और उनके दुख को समझने में उनके लिए मूल्यवान रही होगी। जब हम विलाप के विहित महत्व की बात करते हैं, तो इसे देखने का एक और तरीका है। विलाप और विहित में दो अन्य पुस्तकों के बीच संबंध।

विलाप-गीत व्यवस्थाविवरण अध्याय 28 पर आधारित है, और हम पाते हैं कि विलाप-गीत में व्यवस्थाविवरण 28 से उद्धरण हैं। उदाहरण के लिए, अध्याय 1 में पद 3 में विश्राम-स्थल के बारे में नहीं बताया गया है, और जो लोग व्यवस्थाविवरण 28 को जानते हैं, उनके लिए यह पद 65 से आता है। विलाप-गीत 5 में शाब्दिक रूप से मुखिया होने की बात कही गई है।

शत्रुओं का मुखिया बन जाना व्यवस्थाविवरण 28 और श्लोक 44 की याद दिलाता है। और फिर विलापगीत 1 में श्लोक 5 का अंत निर्वासितों के बंदी के रूप में चले जाने की बात करता है और यह व्यवस्थाविवरण 28 श्लोक 41 की प्रतिध्वनि है। विलापगीत 2.20 उनके घावों के फल खाने की बात करता है और यह सीधे व्यवस्थाविवरण 28 श्लोक 53 से आता है।

और यह बहुत महत्वपूर्ण है। ये ऐसे सुराग होंगे जिन्हें उठाया जाएगा। यह विलाप से जुड़ी पहली सेवा में हो सकता है, व्यवस्थाविवरण 28 का पाठ भी किया गया था जो उन संदर्भों को पुष्ट करेगा।

लेकिन इसका मतलब है कि इसकी व्याख्या है क्योंकि व्यवस्थाविवरण 28 में वे आयतें उस खंड से ली गई हैं जो कानून की अवज्ञा, टोरा की वाचा की अवज्ञा की बात करती है और यही कारण है कि इसराइल को सज़ा मिलनी है। और इसलिए इसे उठाया जाता है और यह एक संकेत है, यह एक संकेत है। यह एक संकेत है कि इसमें जो दिखता है उससे कहीं ज़्यादा है।

यह एक मानवीय परिस्थिति से कहीं अधिक है। इसमें एक दिव्य मानवीय परिस्थिति शामिल है और इसका अर्थ भी है। और फिर दो, आगे देखते हुए, यशायाह की पुस्तक में एक ऐसा भाग है

जो जानबूझकर विलाप को प्रतिबिंबित करता है और इसे उलट देता है और बुरी खबर को अच्छी खबर में बदल देता है।

उदाहरण के लिए, विलापगीत 4:15 शरणार्थी निर्वासितों से कहा गया है, जिनका किसी भी राष्ट्र में कहीं भी स्वागत नहीं किया जाता। और राष्ट्र कहते हैं, चले जाओ, तुम अशुद्ध हो, चले जाओ, उन्हें मत छुओ, वे अशुद्ध हैं। और फिर यशायाह 52:11 में, बेबीलोन के बारे में निर्वासितों को यह शब्द दिया गया है, बेबीलोन से चले जाओ, किसी भी अशुद्ध चीज़ को मत छुओ, तुम घर जा रहे हो।

और इसलिए, यह उलटा है, और शब्दों को उठाया जाता है लेकिन अब उलट दिया जाता है। बुरी खबर अच्छी खबर में बदल जाती है। विलाप 4.17 में, हम अपनी आँखों के बारे में पढ़ते हैं, और हम देख रहे थे, और यह एक नकारात्मक संदर्भ में है; कोई उद्धार दृश्य नहीं है।

लेकिन यशायाह 52.8 आपके पहरेदारों और एक-दूसरे की आँखों में आँखें डालकर कुछ देखने की बात करता है। और वे क्या देखते हैं? परमेश्वर सिय्योन लौट रहा था और उन्हें सिय्योन में वापस लाने के लिए तैयार था। और इसलिए एक बार फिर, यशायाह के उस हिस्से में, जिसे हम दूसरा यशायाह कहते हैं, जो निर्वासन की अवधि से संबंधित है और विलाप के बाद लिखा गया था, यह विलाप में अच्छी खबर, बुरी खबर के संदर्भ में उठाना और उलटना चाहता है।

और फिर, विलाप 1 बार-बार कहता है कि सिय्योन के पास कोई सांत्वना देने वाला नहीं है, कोई सांत्वना देने वाला नहीं है। दूसरे यशायाह में, हम कई बार पाते हैं, यशायाह 49 और यशायाह 51 में, कि परमेश्वर सिय्योन को सांत्वना देने जा रहा है। और इसलिए, एक विहित दृष्टिकोण से, हम इस पीछे की ओर देखते हैं, और विलाप को पता नहीं है, लेकिन इसमें निहित रूप से एक आगे की ओर देखने की बात है, और हम दूसरे यशायाह की आँखों से देख सकते हैं और उस त्रासदी को उलटते हुए देख सकते हैं, जो उस समय पूरी तरह से लग रही थी।

और इसलिए, ये पुराने नियम में हिब्रू बाइबिल के कैनन में विलाप के स्थान पर कुछ शब्द हैं। आइए अब इतिहास में विलाप के स्थान के बारे में सोचें। अगर हम पूछें, 1945 में बर्लिन क्यों गिरा? हम एक सरल उत्तर दे सकते हैं, लेकिन वास्तव में, हमें बहुत अधिक जटिल उत्तर की आवश्यकता है।

और हमें प्रथम विश्व युद्ध तक वापस जाना होगा और जर्मनी की ओर से फिर से युद्ध छिड़ने की आवश्यकता के पूर्ववृत्त को देखना होगा। और फिर हमें 19वीं शताब्दी में वापस जाना होगा, ऑस्ट्रिया में यहूदी विरोधी भावना को जर्मनी के इतिहास और अंततः इतिहास के पतन में योगदान देने वाले एक अतिरिक्त कारण के रूप में देखना होगा। और ऐसा ही विलाप के साथ भी है कि यह इतिहास की एक लंबी अवधि के अंत में आता है, और यह सब एक पहेली की तरह एक साथ फिट बैठता है।

विलाप की रचना निर्वासन की अवधि के दौरान, 586 से 538 ईसा पूर्व, और संभवतः निर्वासन के आरंभिक भाग में लिखी गई थी। इस्तेमाल की गई हिब्रू भाषा का अध्ययन किया गया है और यह निर्वासन-पूर्व पुस्तकों और निर्वासन-पश्चात पुस्तकों के बीच बहुत ही साफ-सुथरे तरीके से फिट

बैठती है। यह भाषा को निर्वासन-पश्चात रूप में बदलना शुरू कर रहा है, लेकिन यह अभी शुरू ही हुआ है।

और इसलिए, भाषाई रूप से यह उस अवधि में बहुत अच्छी तरह से फिट बैठता है जिसके बारे में यह बात कर रहा है। अगर हम उस पहले के दौर में इज़राइल और यहूदा के इतिहास की जांच करने की कोशिश करते हैं, जो उत्तरी राज्य, इज़राइल और फिर दक्षिणी राज्य, यहूदा के पतन में परिणत हुआ, तो यह एक लंबी कहानी का हिस्सा है। और यह डेविड और सुलैमान के उन शानदार वर्षों से बहुत अलग है, जहाँ आप एक इज़राइली साम्राज्य की बात कर सकते थे।

जो हुआ, और इसका कारण अंततः पतन था, वह भूगोल का मूल तथ्य था कि सीरिया और फिलिस्तीन अफ्रीका और एशिया के बीच एक भूमि पुल थे। और इसलिए अक्सर, दो शक्तियों के बीच टकराव होता था, एक तरफ मेसोपोटामिया में दो महान राष्ट्रीय शक्तियाँ और दूसरी तरफ मिस्र। और अक्सर, वे उस भूमि पुल के लिए लड़ रहे थे।

कोरियाई कहावत है कि जब व्हेल संघर्ष करती हैं, तो झींगा की कमर टूट जाती है। कोरिया के मामले में, कोरिया पर जापान और चीन के बीच लड़ाई थी, और कोरिया बीच में हार गया। और जहाँ तक इस भूमि पुल का सवाल है, उत्तर में सीरिया और उत्तरी राज्य और दक्षिणी राज्य इस कहावत के उत्तराधिकारी थे: जब व्हेल और बड़ी मछलियाँ संघर्ष करती हैं, तो झींगा की कमर टूट जाती है।

आठवीं शताब्दी में जो हुआ वह यह था कि उत्तरी मेसोपोटामिया में असीरिया ने अपनी नज़रें पश्चिम की ओर मोड़ लीं। इससे पहले, वह केवल लेबनान पर छापे मारने और उसके मंदिरों और महान इमारतों के बारे में जानकारी प्राप्त करने में ही रुचि रखता था। लेकिन 745 में, एक नया असीरियन राजा आया जो प्राचीन दुनिया का नेपोलियन था, टिग्लथ-पिलेसर III।

और उसने सीरिया और उस पूरे भू-पुल पर अपनी नज़र डाली, जिसमें अब वे दो राज्य शामिल थे, उत्तरी इज़राइल राज्य और दक्षिणी यहूदा राज्य। अब, कोई भी साम्राज्य का हिस्सा बनना पसंद नहीं करता। और 20वीं सदी इस तथ्य को बहुत अच्छी तरह से बयां करती है।

उपनिवेशों और आश्रित राष्ट्रों में विद्रोह की भावना होती है, और वे स्वतंत्रता के लिए प्रयास करते हैं। और ऐसा उत्तरी राज्य और दक्षिणी राज्य में भी था। और 730 के दशक में, तथाकथित सीरो-एप्रैमाइट युद्ध हुआ, जहाँ सीरिया और उत्तरी राज्य को असीरिया से खतरे का एहसास हुआ।

और उन्होंने कहा कि हमें गठबंधन की जरूरत है। हमें सैन्य गठबंधन की जरूरत है, लेकिन हमारी सेनाएं पर्याप्त नहीं हैं, भले ही वे कितनी भी बड़ी हों, हमें यहूदा की सेनाओं की भी जरूरत है। और उन्होंने यहूदा पर दबाव डाला, इस असीरियन विरोधी गठबंधन में हमारे साथ शामिल हो जाओ, नहीं तो हम सब अपनी आजादी खो देंगे।

यहूदा ने खुद को अपने पहाड़ी इलाके में सुरक्षित समझा और ऐसा करने से इनकार कर दिया। लेकिन उसे इस बात का पूरा अहसास था कि एक तरफ सीरिया और इसराइल के बीच और दूसरी तरफ यहूदा के बीच युद्ध छिड़ जाएगा और यहूदा हार जाएगा। तो, उसने क्या किया? खैर,

यहूदा के राजा आहाज ने एक मास्टरस्ट्रोक किया था, लेकिन इसका मतलब था कि उसने खेत बेच दिया, जैसा कि यह था, क्योंकि उसने तिग्लथ-पिलेसर से अपील की, आओ और मेरी मदद करो; मैं पीड़ित हो रहा हूँ।

और, बेशक, इसने एक महान राजनीतिक कारण दिया, एक अच्छा नैतिक कारण, कोई कह सकता है, कि असीरियन आए और सीरिया पर विजय प्राप्त की और इसे प्रांतों में बदल दिया, और उत्तरी इज़राइल के राज्य के साथ भी ऐसा ही हुआ, और यहूदा एक जागीरदार राज्य बन गया। और इसलिए, यह हार गया, यह बहुत हद तक हार गया। और विद्रोह की वही भावना थी, और मिस्र की ओर देखते हुए, शायद मिस्र हमारी मदद करेगा, मिस्र हमारी सहायता के लिए आएगा, और इसलिए मिस्र के साथ एक गठबंधन बनाया गया।

असीरियन साम्राज्य अब बेबीलोन साम्राज्य बन गया है, और नबूकदनेस्सर ने यहूदा पर हमला किया। 597 में, यहूदा पहली बार गिर गया, और समुदाय के प्रमुख सदस्यों को बेबीलोन में निर्वासित कर दिया गया, और 586 में, यहूदा फिर से गिर गया, और दूसरी बार निर्वासन हुआ। और यहीं से विलाप शुरू होता है, और विलाप 586 के बाद, यहूदा के पतन के बाद, यरूशलेम के पतन के बाद है। हम उन वाक्यांशों का उपयोग आकस्मिक रूप से करते हैं, लेकिन इसका मतलब सब कुछ खोना था।

इसका मतलब था मंदिर का विनाश, और इसलिए वह महान परंपरा जो सुलैमान के मंदिर से चली आ रही थी, खो गई। इसका मतलब था राजशाही का अंत, दाऊदी राजशाही, जिसके बारे में यहूदा को उम्मीद थी कि वह हमेशा के लिए रहेगी, और इसलिए यह एक भयानक समय था। इसका मतलब था यहूदा का पूरी तरह से अंत, अब वह एक जागीरदार राष्ट्र नहीं रहा बल्कि बेबीलोन साम्राज्य का एक उप-प्रांत मात्र रह गया।

और बहुत से लोगों को पूर्व की ओर निर्वासित कर दिया गया, लेकिन बहुत से लोगों को छोड़ दिया गया, और जो लोग पीछे रह गए, वे वही लोग हैं जिनके लिए विलापगीत लिखा गया था। और इसलिए हमने इस ऐतिहासिक घटना को एक विशुद्ध ऐतिहासिक घटना के रूप में देखा है, लेकिन अब हमें यह पूछना चाहिए कि धर्मशास्त्र में इसका क्या स्थान है? पुराने नियम में जिस दिव्य योजना का उल्लेख है, उसमें इसका क्या स्थान है? वहाँ इसका क्या स्थान है? 2 राजाओं के अंत में, हम यरूशलेम के पतन और उसके अर्थ के बारे में, उसके सभी भयानक विवरणों के साथ, एक धर्मनिरपेक्ष वर्णन पाते हैं, लेकिन इसके साथ-साथ, और एक श्लोक है जो धर्मशास्त्र की ओर मुड़ता है। 2 राजा 24, 20, यरूशलेम और यहूदा ने प्रभु को इतना क्रोधित किया कि उसने उन्हें अपनी उपस्थिति से निकाल दिया।

यह केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं थी। यह एक धार्मिक घटना थी। इसका सम्बन्ध इस्राएल के बीच सम्बन्धों के टूटने से था, जो अब केवल यहूदा के रूप में है, इस्राएल और यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर के बीच सम्बन्ध, और यहोशू से लेकर राजाओं तक के महाकाव्य इतिहास से, यह परमेश्वर के लोगों के बारे में बताता है कि वे मूसा के कानून के वाचा मानकों को त्याग रहे हैं और निर्वासन-पूर्व भविष्यवक्ताओं की चेतावनियों को अनदेखा कर रहे हैं।

वे परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोही थे। और इसलिए, दो विद्रोह चल रहे थे जिसके कारण यरूशलेम का पतन हुआ, और ऐतिहासिक पतन हुआ, राजा नबूकदनेस्सर के विरुद्ध विद्रोह हुआ, लेकिन साथ ही परमेश्वर के विरुद्ध धार्मिक विद्रोह भी हुआ। और इसलिए, परमेश्वर बेबीलोन की सेना के पीछे था।

नबूकदनेस्सर यहूदा पर आक्रमण करने और यिर्मयाह को पकड़ने में यहोवा का हथियार था। और इसलिए, इस महाकाव्य इतिहास की बहुत अधिक प्रतिध्वनि है जो 2 राजाओं के अंत में बहुत दुखद रूप से समाप्त होती है। लेकिन निर्वासन-पूर्व भविष्यवक्ताओं के साथ एक संरेखण भी है क्योंकि हम पाएंगे कि विलाप ने अपनी शब्दावली में भी उनकी कही गई बातों पर गौर किया।

और इस संरेखण में, निर्वासन से पहले के उन भविष्यवक्ताओं को देखते हुए, हम पतन के बारे में लगातार चेतावनी पाते हैं, पहले उत्तरी राज्य और फिर दक्षिणी राज्य का पतन क्योंकि परमेश्वर के लोग परमेश्वर से संपर्क खो चुके थे। और इसलिए, विलाप का पुराने नियम के धर्मशास्त्र में अपना स्थान है और वह उन साहित्यिक परंपराओं को उठाना चाहता है जिनका उसने सामना किया। आइए अब पूछें, इसकी संस्कृति में विलाप का क्या स्थान था? खैर, इज़राइल उन लोगों में से एक था जो भूमध्यसागरीय क्षेत्र में थे और उन्होंने हम उत्तरी यूरोपीय लोगों और उनके वंशजों के कठोर ऊपरी होंठ के खिलाफ अपने दिलों को बहुत अधिक पहना था।

वे भावनात्मक रूप से बहुत अभिव्यंजक और बाहरी रूप से प्रदर्शनकारी थे। मैंने सुना है कि इटली उत्तर और दक्षिण में विभाजित है। और दक्षिण में, लोग हमेशा बहुत उत्साहित तरीके से मामा मिया चिल्लाते रहते हैं।

जबकि उत्तरी इटली के लोग बहुत ज़्यादा सख्त हैं। और अगर यह सच है, तो इज़राइल दक्षिणी इटली जैसा था। उदाहरण के लिए, शोक और विलाप शोक से भरे हुए हैं।

विलाप व्यवहार में दुःख को दर्शाता है, और यह इसकी प्राचीन संस्कृति का हिस्सा है। और शोक की रस्में थीं और शोक गीत थे, जिनमें लोग शामिल होते थे। और यह कुछ ऐसा है जो शायद हमारे लिए अजनबी है।

हमारे यहां पहले शोक मनाने और विलाप करने की परंपराएं थीं, लेकिन अब वे बहुत कम दिखाई देती हैं। मुझे याद है कि मैं इंग्लैंड में पला-बढ़ा था और 1947 में मेरी मां की मृत्यु हो गई थी। और अंतिम संस्कार से परे भी कुछ रस्में निभानी पड़ती थीं।

घर के सामने की खिड़कियों में लगे सभी पर्दे बंद रखने पड़ते थे। और अगर आप उन कमरों का इस्तेमाल करते हैं, तो आपको बिजली की रोशनी जलानी पड़ती थी। और पुरुषों को अपनी आस्तीन के चारों ओर एक काली पट्टी बांधनी पड़ती थी।

और मैं स्कूल में अपनी स्कूल टाई नहीं, बल्कि लंबे समय तक काली टाई पहनता था। और यही वह चीज़ है जो किसी से करने की अपेक्षा की जाती थी। लेकिन अब वे परंपराएं खत्म हो गई हैं।

और लोग दुःख का सामना नहीं करना चाहते और इससे शर्मिंदा होते हैं। एक कहावत है, हंसो, और पूरी दुनिया तुम्हारे साथ हंसेगी। रोओ, और तुम अकेले रोओगे।

और मुझे लगता है कि आज पश्चिमी सभ्यता में यह दुःखद रूप से सच है। लेकिन प्राचीन समय में इज़राइल में, बहुत से निर्धारित अनुष्ठान होते थे, जिनमें आप तब शामिल होते थे जब आप दुखी होते थे, शोक मनाते थे और जब आप बहुत परेशान होते थे। और इसलिए, उदाहरण के लिए, विलाप किया जाता था।

हम इसे अंतिम संस्कार विलाप कहते हैं। और यह एक धर्मनिरपेक्ष विलाप था। जब कोई मर जाता था, तो आप शोक मनाते थे।

और यह कोई धार्मिक मामला नहीं था। यह एक धर्मनिरपेक्ष मामला था। आप अपने मानवीय नुकसान में डूबे हुए थे।

और इसका सबसे बढ़िया उदाहरण, एक बहुत लंबा उदाहरण, जो इसे दर्शाता है, 2 शमूएल अध्याय एक में आता है, जब शाऊल और योनातन मर जाते हैं। और दाऊद शाऊल के लिए विलाप करता है। वह अभी भी उस राजा के प्रति वफ़ादारी महसूस करता है।

वह योनातन, युवराज और दाऊद के सबसे अच्छे दोस्त के लिए विलाप करता है। 2 शमूएल, अध्याय एक के दूसरे भाग में, हमारे पास यह लंबा अंतिम संस्कार विलाप है। और इसे श्लोक 17 में विलाप, विलाप कहा गया है।

हिब्रू शब्द है किना, जिसका अर्थ है विलाप। आश्चर्यजनक रूप से, हमारा अंग्रेजी शब्द विलाप उसी हिब्रू शब्द का ग्रीक में अनुवाद है। यह नाम इस धर्मनिरपेक्ष अंतिम संस्कार विलाप के नाम पर रखा गया है।

और हम इस पर बाद में टिप्पणी करेंगे। तो, हमारे पास यह किना है, यह धर्मनिरपेक्ष अंतिम संस्कार विलाप, जिसमें भगवान का कोई उल्लेख नहीं है, लेकिन यह पूरी तरह से मानवीय स्तर पर काम करता है। और यह एक दोहराव से चिह्नित है: कैसे शक्तिशाली गिर गए हैं।

और निश्चित रूप से, ये महान सैन्य नायक, शाऊल और जोनाथन, शक्तिशाली हैं। लेकिन हमें उस शब्द 'कैसे' पर गौर करने की ज़रूरत है क्योंकि यह एक बहुत ही अभिव्यंजक शब्द है। और अंग्रेजी का वह विस्मयादिबोधक 'कैसे' वास्तव में इसके साथ न्याय नहीं करता।

यह चीख या चीख की तरह है। यह ईच, ईच है। इस विलाप में तीन बार कल्पना करें, ईच।

और वहाँ वह पीड़ा है। यह शब्द पीड़ा को व्यक्त करता है, जो हमारे अंग्रेजी अनुवाद में नहीं आता है। मैंने विलाप पर एक टिप्पणी लिखी है जिसका नाम है शोक की आराधना पद्धति।

और इसके एक हिस्से के रूप में, मैंने अपना खुद का अनुवाद प्रदान किया। और जब विलाप में, हमारे सामान्य अनुवादों में, हम पाते हैं कि मैं कैसे अनुवाद करता हूँ कि यह कितना भयानक है,

जो थोड़ा शब्दाडंबरपूर्ण और अनाड़ी है, लेकिन यह उस शब्द की भावनात्मक प्रकृति को सामने लाता है। लेकिन सख्ती से, यह एक चीख या चीख है।

ईच! ठीक है। और इसलिए, हम आगे बढ़ते हैं। हम यिर्मयाह के अध्याय नौ में पाते हैं कि इस धर्मनिरपेक्ष मानवीय विलाप का भी संदर्भ है।

यिर्मयाह 9: 17 से 22. 'सोचो, विलाप करने वाली स्त्रियों को बुलाओ। 'कुशल स्त्रियों को बुलाओ।

"वे शीघ्र ही हमारे ऊपर एक शोकगीत गाएँ" ताकि हमारी आँखों से आँसू बहें, "हमारी पलकें पानी से बहें, "क्योंकि सिय्योन से विलाप का गीत सुनाई देता है। "हम कैसे बर्बाद हो गए हैं!" और यह वह शब्द है, ईच। और भी, यह भी, यह शब्द शोकगीत है किना, किना।

ठीक है। दिलचस्प बात यह है कि महिलाओं का संदर्भ दिया गया है। क्योंकि महिलाओं का एक वर्ग था, पेशेवर महिलाएँ, और उनका काम था विलाप में भाग लेना और जब कोई उनका प्रिय खो जाता है तो परिवार का नेतृत्व करना, उन्हें विलाप में ले जाना और उन्हें प्रोत्साहित करना, उन्हें यह दिखाना कि शोक कैसे मनाया जाता है।

और यह दिलचस्प है क्योंकि हम विलाप की पुस्तक में इसी भूमिका के साथ एक महिला को पाते हैं। और फिर यिर्मयाह 22 और श्लोक 18, यह राजा की आने वाली मृत्यु के बारे में बात कर रहा है। यह कहता है, "वे उसके लिए विलाप नहीं करेंगे," 'हाय, मेरे भाई, या हाय, मेरी बहन।

"वे उसके लिए विलाप नहीं करेंगे, "हाय, प्रभु, या हाय, महामहिम' कहते हुए।" हमने सामान्य बोलचाल में उस शब्द, अफसोस, को छोड़ दिया है, लेकिन हम इसे शोक के संकेत के रूप में पहचानते हैं। यह अब वह शब्द ईच नहीं है, बल्कि यह एक और शब्द है, होय। और यह कोई चीख या चीख नहीं है; यह एक विलाप है।

मुझे याद है कि कुछ साल पहले मैं दो दिनों के लिए अस्पताल में था, और इसका मतलब था कि मुझे रात भर वहीं रहना पड़ा। मेरे सामने वाले कमरे में एक बुजुर्ग अफ्रीकी-अमेरिकी सज्जन थे जो मर रहे थे, और उनकी बेटी उनसे मिलने आई थी। और रात के दौरान उनकी मृत्यु हो गई।

और ट्रॉलियों का पहिया चलने लगा और कुछ धीमी आवाज़ें भी सुनाई देने लगीं। और बेटी भी आ गई। और जब उसने अपने पिता को देखा, तो वह रोने लगी।

आह, आह! नर्सें उसे जल्दी से वार्ड के बाहर प्रतीक्षा कक्ष में ले गईं, लेकिन पूरा वार्ड इस चीख से जाग गया। और वह होय, यह शब्द है, होय! और यह कोई चीख या चीख नहीं है, बल्कि यह एक विलाप है, यह एक विलाप है। और इसलिए, आवाज़ में यह अभिव्यक्ति है कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं।

कोई कह सकता है कि यह बहुत स्वस्थ अभिव्यक्ति है, जबकि हम इसे अपने अंदर ही रखते हैं, और हम इसके अनुसार अधिक पीड़ित होते हैं। अब, यह धर्मनिरपेक्ष अंतिम संस्कार विलाप, इसे अन्य आपदाओं तक भी बढ़ाया गया था। इसलिए, हम यह नहीं पूछते हैं कि, अगर विलाप में

धर्मनिरपेक्ष विलाप है, तो कौन मर गया है? नहीं, हम पूछते हैं, आपदा क्या है? और उदाहरण के लिए, यहेजकेल अध्याय 26 में, हम पाते हैं कि टायर, महान शहर टायर पर एक विलाप, एक भविष्यवाणी विलाप है, और यह गिरने वाला है।

सोर के लिए विलाप किया जाएगा। और इसलिए, सोर का पतन, एक समानांतर, कोई कह सकता है, यरूशलेम के पतन के लिए, लेकिन वहाँ एक विलाप की विशेषता है। हे प्रसिद्ध शहर, तुम समुद्र से कैसे गायब हो गए हो।

यह भविष्य की ओर देखने वाला विलाप है। समुद्र के किनारे के तटवर्ती क्षेत्र आपके जाने से व्याकुल हैं। और वह शब्द, किना, श्लोक 17 में, वे विलाप का गीत गाएँगे।

यह किना है। बहुवचन किना वह शब्द है जो हिब्रू बाइबिल में विलाप का शीर्षक है। लेकिन इसे एक और आपदा, एक शहर के पतन के लिए विस्तारित किया गया है।

और ऐसा ही विलापगीत में भी है। और फिर, विलापगीत में ही आते हुए, हम पाते हैं कि अध्याय एक की शुरुआत में, अध्याय दो की शुरुआत में, और अध्याय चार की शुरुआत में, हम पाते हैं कि चीख या चीख वहाँ दोहराई गई है, लेकिन अब एक शब्दांश, ईच के रूप में नहीं, बल्कि अब दो शब्दांशों में, जो इसे और भी भयानक बनाता है। ईच हर! ईच हर! ईच हर! और इसलिए उन पहले अध्यायों, अध्याय एक, दो और चार के उन पहले शब्दों में बहुत सारी भावनाएँ हैं।

अब, इस धर्मनिरपेक्ष अंतिम संस्कार की मौखिक अभिव्यक्ति के अलावा, विलाप कई अन्य विपत्तियों तक भी फैला हुआ था; अन्य शोक अनुष्ठान भी थे। और इसलिए, उदाहरण के लिए, हम अय्यूब की पुस्तक में पाते हैं कि अय्यूब के सात्वनादाता अध्याय दो के अंत में आते हैं, और वे अपनी आवाज़ उठाते हैं और जोर से रोते हैं। उन्होंने अपने वस्त्र फाड़े और अपने सिर पर हवा में धूल फेंकी।

और वे सात दिन और सात रात उसके साथ ज़मीन पर बैठे रहे, और किसी ने उससे एक शब्द भी नहीं कहा क्योंकि उन्होंने देखा कि उसका दुख बहुत बड़ा था। इसलिए, वहाँ बहुत सी प्रदर्शनकारी बातें हो रही हैं। और हम पाते हैं कि, अध्याय नौ में एक बिंदु पर एज्रा व्यथित है, और वह कहता है, श्लोक तीन से पाँच, जब मैंने यह सुना, तो मैंने अपना वस्त्र और अपना लबादा फाड़ दिया, अपने सिर और दाढ़ी से बाल नोच लिए और भयभीत होकर बैठ गया।

फिर इस्राएल के परमेश्वर के वचनों से काँपने वाले सभी लोग मेरे चारों ओर इकट्ठे हो गए, जबकि मैं शाम की बलि तक स्तब्ध बैठा रहा। शाम की बलि के समय, मैं अपने वस्त्र और अपने वस्त्र फाड़े हुए उपवास से उठा और अपने घुटनों पर गिर गया और अपने हाथों को यहोवा मेरे परमेश्वर की ओर फैलाया और कहा, मैंने प्रार्थना की। यह दिलचस्प है क्योंकि ये सुबह की रस्में अब प्रार्थना की प्रारंभिक क्रियाएँ हैं।

हम पाएंगे कि विलाप में प्रार्थना एक बड़ी भूमिका निभाती है। और फिर, नहेमायाह, यहाँ एक बुरी खबर है। नहेमायाह 1:4 में, जब मैंने ये शब्द सुने, तो मैं बैठ गया, रोया, और कई दिनों तक विलाप किया, स्वर्ग के परमेश्वर के सामने उपवास और प्रार्थना की।

ये दो अंतिम मामले दिलचस्प हैं क्योंकि हम प्रार्थना के क्षेत्र में चले गए हैं, सिर्फ धर्मनिरपेक्ष क्षेत्र के बजाय धार्मिक क्षेत्र में। विलाप में, धर्मनिरपेक्ष और धार्मिक एक साथ हो जाते हैं।

और इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि जब हम भजन संहिता की पुस्तक को देखते हैं, तो हमें ऐसे कई मामले मिलते हैं जहाँ भजन प्रार्थना में सुबह की रस्में विलाप करती हैं। और भगवान से प्रार्थनाएँ हैं जिसमें भगवान को समस्या बताई जाती है और उनकी मदद माँगी जाती है। और इसके साथ ही, सुबह की रस्में भी हैं।

और इसलिए, उदाहरण के लिए, भजन 69 की आयत 10 और 11 में, मैंने उपवास करके अपनी आत्मा को नम्र किया। मैंने टाट को अपना वस्त्र बनाया। और भजन 35 की आयत 13 और 14 में भी, हम पाते हैं कि जब वे बीमार थे, तो मैंने टाट ओढ़ा।

मैंने उपवास करके खुद को कष्ट पहुँचाया। मैंने अपने सिर को छाती पर झुकाकर प्रार्थना की, जैसे कि मैं किसी मित्र या भाई के लिए शोक मना रहा हूँ। मैं ऐसे घूमता रहा जैसे कोई व्यक्ति अपनी माँ के लिए विलाप कर रहा हो और शोक मना रहा हो।

यह दिलचस्प है, जैसा कि अय्यूब के सांत्वनादाताओं के साथ हुआ था। यह सहानुभूति की अभिव्यक्ति है, क्योंकि यह आपका विशेष शोक नहीं था, बल्कि यह कि आप उन लोगों में शामिल थे जो शोक मना रहे थे। हम इस घटना को विलाप में भी देखेंगे। और फिर भजन 45, श्लोक 25 में, दुःख की अभिव्यक्ति के रूप में, हम धूल में डूब जाते हैं, हमारे शरीर जमीन से चिपक जाते हैं।

और ज़मीन के करीब जाना, ज़मीन पर बैठना, बैठना, ये शोक की शारीरिक मुद्राएँ हैं। और इसलिए, हमें पूछना होगा कि क्या विलाप की पुस्तक में ऐसे मामले हैं। और वास्तव में, वे हैं।

तो, हम विलाप-गीत को ध्यान से देखेंगे, यहाँ-वहाँ से कुछ ढूँढ़ेंगे, और देखेंगे कि अध्याय एक और श्लोक एक में हमें क्या मिला। शहर बैठा है, शहर बैठा है। और अगर हमने उन शोकपूर्ण व्यवहारों को नहीं देखा होता, तो हमें पता नहीं चलता।

यह शोक व्यक्त करने का एक तरीका है। तीसरी आयत में, हमारे संस्करणों में कहा गया है कि यहूदा राष्ट्रों के बीच रहता है, वस्तुतः राष्ट्रों के बीच बैठता है। और बेबीलोन में निर्वासित लोग भी शोक मना रहे थे, और वे बैठे हुए थे।

और फिर एक दो में, रात में गालों पर आंसू बहाते हुए फूट-फूट कर रोने का जिक्र है। और यह रोना, फूट-फूट कर रोना, यह भी शोक का एक संकेत है। एक 17 में, ज़ायन अपने हाथ फैलाती है, लेकिन उसे सांत्वना देने वाला कोई नहीं है।

और यह इशारा है: कृपया मेरी मदद करें, कृपया मेरी मदद करें। और जाहिर है, यह उस शोक का हिस्सा है, है न? आप दूसरे लोगों से सहानुभूति चाहते हैं, लेकिन यह कभी नहीं आती। और इसलिए हमें शोक की ये शारीरिक अभिव्यक्तियाँ मिल रही हैं।

और फिर एक 19 में, एक 20 में, हम देखते हैं, शब्द देखो, हे भगवान, मैं कितना व्यथित हूँ। मेरा पेट मचल रहा है, मेरा दिल मेरे भीतर तड़प रहा है। और इस दुःख के मनोदैहिक प्रभाव हैं, और इसका परिणाम पेट दर्द, वह दुःख है।

और इसलिए वहाँ शारीरिक प्रभाव हैं। और फिर दो 10 में, हम पाते हैं कि बेटी सिथ्योन के बुजुर्ग चुपचाप जमीन पर बैठे हैं। और यह एक शोक मुद्रा है।

वे अपने सिर पर धूल डालते हैं और टाट ओढ़ते हैं। और यह भी शोक है। और फिर दो 11, मेरी आँखें रोने से सीमेंट बन गई हैं, मेरा पेट मरोड़ रहा है, मेरा पित्त ज़मीन पर बह रहा है।

इस दुःख के रोना और मनोदैहिक प्रभाव भी हैं। आप इतने अभिभूत हैं कि आपका शरीर ही शोक मना रहा है। तीन 28 में, हम बैठने का संदर्भ पाते हैं, मौन में अकेले बैठने का।

तीन 48 से 51, हम रोते हुए पाते हैं। मेरी आँखों से आँसू की नदियाँ बह रही हैं। मेरी आँखें बिना रुके, बिना रुके बह रही हैं।

और फिर, वहाँ ये शोक अनुष्ठान हैं। तो, हम देखते हैं कि वह सभ्यता कितनी प्रदर्शनकारी थी। और यह अनिवार्य रूप से इज़राइल की संस्कृति में जगह है।

और अब यह दिलचस्प तरीके से जुड़ता है। विलाप में यरूशलेम के पतन को यरूशलेम और पीछे छूटे यरूशलेम, पीड़ित यरूशलेम के मानवीकरण के साथ जोड़ा गया है। इसे एक महिला के रूप में बहुत अधिक मानवीकृत किया गया है। हम अध्याय एक और दो में आने पर देखेंगे।

इसका एक दिलचस्प उदाहरण है और मेसोपोटामिया के शहर के विलाप में इसका एक समानांतर उदाहरण है। हम पाते हैं कि शहर शोक में डूबा हुआ है, नागरिक शोक में डूबे हुए हैं, और शहर की देवी शोक में डूबी हुई है। और शहर मेसोपोटामिया में जहाँ भी था, यहाँ-वहाँ एक महान शहर को नष्ट कर दिया गया है। और ऊपर के देवताओं ने बिना किसी कारण के उस शहर को नष्ट करने का निश्चय किया है।

लेकिन एक देवता है, शहर की देवी, जो अपने शहर के नुकसान पर शोक मना रही है। विलाप के साथ एक तरह का समानांतर है, लेकिन अब यह सिथ्योन का ही मानवीकरण है। और हम देखेंगे कि यह शहर का प्रतिनिधित्व करता है, शहर का मानवीकरण और आक्रमणकारी सेना द्वारा किए गए विनाश में यरूशलेम पर आई पीड़ा का मानवीकरण।

लेकिन हम यह भी पाएंगे कि सिथ्योन मण्डली का एक व्यक्तित्व है। और सिथ्योन से बात करना, सिथ्योन को बताना कि उसे क्या करना है, और सिथ्योन वैसा ही करता है। और सिथ्योन की भूमिका एक उदाहरण बनने की है, एक आदर्श बनने की है कि मण्डली को उस पीड़ा से बाहर निकलने के लिए क्या करने की आवश्यकता है।

और इसलिए, हम एक तरह की समानता पाते हैं, किसी भी तरह से सटीक नहीं, लेकिन ऐसा लगता है कि मेसोपोटामिया से एक व्यापक परंपरा है जिसने विलाप को प्रभावित किया है। और यह आश्चर्यजनक नहीं है क्योंकि यह इतने सालों तक मेसोपोटामिया के प्रभुत्व में रहा था। ठीक है, हम यहीं रुकेंगे।

अगली बार, मैं विलाप के पीछे की परंपराओं के बारे में और अधिक चर्चा करना चाहता हूँ। मैं शोक और शोक के मनोविज्ञान और विलाप में यह कैसे प्रकट होता है, इस पर भी चर्चा करना चाहता हूँ। लेकिन अभी के लिए, हम रुकेंगे।